

远望集

易行格律诗作诗论选

易行诗友

山引翠娥，情向以，不易处。

删云，万句言，未竟。

已故女词典，已故词，勿芳。

仍写，诗稿。

彩子，去。

利石，十。

元三月

远望集

——易行格律诗作诗论选

易 行 著

线装书局

图书在版编目(CIP)数据

远望集：易行格律诗作诗论选 / 易行著。—北京：
线装书局，2011.1

ISBN 978 - 7 - 5120 - 0302 - 6

I. ①远… II. ①易… III. ①格律诗—作品集—中国—当代
②格律诗—文学研究—中国—当代 IV. ①I227②I207. 22

中国版本图书馆 CIP 数据核字(2011)第 000491 号

远望集——易行格律诗作诗论选

作 者：易 行

责任编辑：赵安民 王 贺

出版发行：线装书局

地址：北京西城区鼓楼西大街 41 号(100009)

电话：010—64045283 网址：www.xzhbc.com

经 销：新华书店

印 制：北京画中画印刷有限公司

开 本：710×1000 1/16

印 张：18.75

字 数：330 千字

版 次：2011 年 1 月第 1 版第 1 次印刷

印 数：2000 册

定 价：45.00 元

序

易行君说，《远望集》的出版是为诗词的改革与创新摇旗呐喊，我也是摇旗呐喊的志愿者，虽已老迈，愿与子同行。

“求正容变”是正确处理遵守格律与变化创新两者关系的指导原则。诗词创作，自然要严格遵守和熟练运用诗词格律，最好能达到“从心所欲不逾矩”的程度，却也不能把格律看成凝固的金科玉律。合理的变动是允许的，在发展中甚至是必然的。变，至少有三种情况。一是格律的灵活运用。古今大诗家灵活运用格律的例子不胜枚举。如同公孙大娘手中的剑器，套路有其程式，舞起来都是灵活的。二是格律的创新，即形成另一种新诗体。诗，从四言到五言，从五言到七言，从诗到词，从词到曲，如此等等。中国诗歌几千年的格律发展史就是这样走过来的。一种新诗体的诞生，是许多条件综合促成的，不可能一蹴而就。三是除旧布新，抛弃格律中的不合理成分，近些年许多朋友主张采用今韵即是一显例。

上世纪四十年代，我习诗十年，一直严守平水韵。虽然感到其中有些同韵的字却不在同一韵部，又有些不同韵的字却在同一韵部里，但谨遵师训，认为作诗即应如此，不曾多想。后来，弃旧从新，写新诗约二十年。我写新诗都押韵，自然不用韵书。改革开放以来，重理就业。对于用韵，悟出一点道理。押韵为什么？为着增加语言的音乐感与和谐美，读起来上口，听起来悦耳，记起来便捷，唱起来动听。押韵为此受欢迎，乃至在广告和某些小品节目中广泛应用。押韵的效果不是表现于书面，而是表现于口头。如果按韵书是押韵，念出来却不押

韵，难道仍应胶柱鼓瑟，不应改弦更张吗？“平水韵”应该像古越王的宝剑那样，今天不宜用于实践。在这三十年中，我写诗词不再遵平水韵，随口押韵，韵书只供参考。虽然有些冒失，但是我相信，这样做是对的。时下出了几种今韵书，功德无量。我国在韵书出现以前，曾产生过大量辉煌的经典诗作，《诗经》《离骚》皆是。而今，能说普通话、运用汉语拼音的人越来越多。汉语拼音，使辨认怎样是押韵一目了然。今后，押韵不靠韵书，会越来越普遍了。

易行的诗论，鲜明晓畅，比我说得透彻。易行的诗作，清新有味，几位老朋友已经论述，我都同意，不再重复。我只就他的创作主张说这些话，借此投一张赞成票。农历已近腊月，眼看就到春节。“千门万户曈曈日，总把新桃换旧符”，诗词也是一样，在新的一年里一定会有一个新的气象。

刘 征

二〇一一年元旦于蔚轩

自序

《古韵新风——当代诗词创新作品选辑》第一辑《霍松林作品集》、《刘征作品集》、《袁行霈作品集》、《马凯作品集》、《星汉作品集》、《杨逸明作品集》、《王亚平作品集》和我的《易行作品集》出版后，广受好评，销售情况也出乎意料地好。有的读者还指名道姓专要某人某集。由于整套书不能拆零，没办法，诗家只好请书局专门加印自己的集子，以供不时之需。我也遇到类似情况，也想加印自己的集子，但转念一想，与其加印，不如再补充一些新作另编一本。于是，便编了这本《远望集——易行格律诗作诗论选》。

之所以标明本书为“格律诗作诗论选”，是想强调“格律”之于诗并非“枷锁”，它的约束是为了给诗增加韵致、增加爆发力。但又不能约束得过死，过死反而会使诗失去活力。就是说“格律”要适当改进，适度放宽。当下诗界倡导的“求正容变”原则，既是对它的肯定，也是赞同对它的“适当改进、适度放宽”。我本人也是这一原则的拥护者、力行者：一、在创作正体格律诗五律七律五绝七绝时不仅有“变格”，而且有“破格”。例如为了不以词害意而当救不救的“孤平”、“三平调”等。二、在创作正体格律诗时不仅有“变格”，而且有“变体”，例如“折腰体”、“仄韵体”、“三韵小律体”、“六言绝句体”、“歌行体”等，还有不少不依词谱的“自制词”，以及极少不依律绝格式的“新古体”（也可称之为“民歌体”）。三、作诗填词则一律改用新声韵（也可称之为“京韵”）。至于我的这些“变”，这些改进是否成功，是否行，还有待于方家、读

者的品评。但不管怎么说，勇于尝试总是好的，何况我又不是第一个！霍松林、刘征、丁芒等前辈早就走在头里，后面紧跟的还有不少，我只不过是其中之一而已。

这本以上述“求正容变”为宗旨的《远望集》所收诗词作品是《古韵新风》中《易行作品集》的两倍，共五百多首，多而杂。为了使其“眉目清秀”一些，采取了分类编排的办法。当然这分类只是大致的，不十分准确。例如“北国”理应有“西北”，而将“西北”放进了“西部”；江苏安徽并不全在“江南”，而划归了“江南”；至于“居家”、“度日”就更是“大概齐”了。《远望集》所收诗论也较前多出一倍。多出的部分都是在马凯同志有关诗词“求正容变”的讲话或《再谈格律诗的“求正容变”》的文章发表以后写的。其中，既有学习后的心得，也有学习后的遐想。后面所附专家学者的评论文字，也多是从诗词改革创新方面鼓励鞭策我的。

我没请人评论过，也很少请人作序，因为怕人为难。霍松林老和于友先主席例外，因为他们早就给予我极为中肯的指点和鼓励了，所以我才请他们为我的《神怡集》作序。刘征老也是例外，因为此前他不仅欣然为我的《神怡集》题签，还写了“铁肩担道义，妙手著文章”的名联赠我以示鼓励，更以潇洒自如的笔法写下我的斋名“长天远日轩”，并在信上说，他觉得这个斋名很好……我觉得我与刘征老也是心意相通的，不仅是忘年交，而且是神交已久！五十年前，我还是一个中学生时就在大会小会上背诵他的寓言讽刺诗了；五十年后我对他的诗、他的词、他的为人均心向往之。只是由于他的眼神不好，才一直不敢打扰，一直不好意思让他劳神费力地看我那些幼稚文字。可是，这次不一样，这次我是想用我的尽管还不很成熟的诗作和诗论去为诗词的改革创新摇旗呐喊，并想通过一直走在前面的刘征老的笔，为诗词的改革创新鼓劲、加油。

如果说新的诗词盛世的到来，有待于有足够影响力诗派的形成，那么前述的霍松林、刘征、袁行霈、马凯、星汉、杨逸明、王亚平等和《古韵新风——当代诗词创新作品选辑》第二

辑中的丁芒、郑伯农、刘章、郑欣淼、李文朝、蔡世平、刘庆霖、赵宝海等，以及众多勇于改革创新的诗家，不就是一个强有力诗派吗？这诗派不是“江西派”、“边塞派”或别的什么“派”，而是“创新派”！如果非要拉大旗的话，它的大旗就是毛泽东！而以毛泽东为代表的新时代中华诗词大军完全可以撑得起一个不亚于唐宋的百年诗词盛世。现在的人可以不认可，但十年、百年、千年后的人一定会认可：唐、宋、新中国，而且新中国的第一个百年还是诗词并盛时期。问题是我们不能虎头蛇尾，一定要在未来的几十年内再创新高。胡锦涛、温家宝、李长春以及刘云山、马凯等党和国家领导人所以如此重视中华诗词的复兴和发展，我想，就是为了这个“再创新高”，就是为了让诗词成为提高全民素质的文化软实力，以促进国民经济的大发展、大跨越。在中国，诗词的兴盛往往是国家兴盛的体现，而国家的兴盛一定会带动诗词的兴盛。还是那句话：“千山万水又长征，古韵翻新壮远行。谁让此身逢盛世，诗心一片鼓雄风！”

易 行

二〇一〇年十二月二十六日恰逢毛泽东诞辰
急就于长天远日轩灯下

目 录

| | |
|-------------------|---------|
| 序 | 刘 征 (1) |
| 自序 | 易 行 (3) |
| 神州 | (1) |
| 长江 | (2) |
| 六州歌头 · 三峡 | (2) |
| 赤壁怀坡公 | (2) |
| 追溯三江源 | (2) |
| 黄河 | (3) |
| 自制词 · 黄河之水 | (3) |
| 壶口咏李白 | (3) |
| 北国 | (4) |
| 长城 | (5) |
| 破阵子 · 八达岭长城 | (6) |
| 自制词 · 登长城 | (6) |
| 长城行 | (6) |
| 京门远眺 | (7) |
| 故宫 | (8) |
| 故宫秋望 | (8) |
| 在天安门广场看升旗 | (8) |
| 御街行 · 长安街上 | (8) |
| 登景山 | (9) |
| 永遇乐 · 再登景山 | (9) |
| 永遇乐 · 广场抒怀 | (9) |
| 永遇乐 · 神游金台 | (10) |

| | |
|-------------|------|
| 风入松·金台 | (10) |
| 御街行·圆明园 | (11) |
| 巫山一段云·游京郊古寺 | (11) |
| 题赠人大附中 | (11) |
| 天津 | (12) |
| 南开 | (12) |
| 回南开赠书有感 | (12) |
| 黄帝城 | (13) |
| 三祖堂 | (13) |
| 蚩尤寨 | (13) |
| 赤城纪游 | (13) |
| 桑干河 | (14) |
| 官厅水库 | (14) |
| 热河 | (14) |
| 易水 | (14) |
| 保定 | (15) |
| 清直隶总督署衙观感 | (15) |
| 邯郸 | (15) |
| 回唐山(组诗) | (16) |
| 太原 | (18) |
| 在恒山悟道 | (18) |
| 定风波·恒山 | (18) |
| 自制词·恒山谣 | (19) |
| 五台山禅机 | (19) |
| 二上菩萨顶 | (19) |
| 夜览《吕梁赋》 | (19) |
| 呼和浩特 | (20) |
| 呼伦贝尔大草原 | (20) |
| 沈阳故宫观感 | (20) |
| 千山 | (20) |
| 旅顺万忠墓感赋 | (21) |

| | | |
|--------------|-------|------|
| 长春 | | (21) |
| 长白山天池 | | (21) |
| 天池吟 | | (22) |
| 自制词·五大连池 | | (22) |
| 镜泊湖 | | (22) |
| 镜泊湖远眺毛公山 | | (23) |
| 游火山口地下森林有感 | | (24) |
| 喜读《大庆赋》 | | (24) |
| 北大荒秋行(组诗) | | (24) |
| 江南 | | (29) |
| 上海 | | (30) |
| 珠溪采风(组诗) | | (30) |
| 南京 | | (32) |
| 苏州 | | (32) |
| 寒山寺 | | (32) |
| 苏州记游 | | (33) |
| 扬州 | | (33) |
| 登镇江北固山 | | (34) |
| 题金山寺 | | (34) |
| 镇江中泠泉自励 | | (34) |
| 周庄 | | (34) |
| 吴江行(组诗) | | (35) |
| 杭州 | | (37) |
| 望飞来峰 | | (37) |
| 题灵隐寺 | | (37) |
| 赠灵隐寺进香客 | | (38) |
| 闽浙途中 | | (38) |
| 大明山 | | (38) |
| 从大明山到天目山 | | (39) |
| 庚寅中秋翌日冒雨登天目山 | | (39) |
| 冒雨独行天目山千年古道 | | (39) |

| | |
|-----------|------|
| 天目山涉险 | (40) |
| 谒钱王陵 | (40) |
| 钱塘观潮 | (40) |
| 再观江潮 | (41) |
| 过富春江严子陵钓台 | (41) |
| 千岛湖 | (41) |
| 普陀山禅意 | (42) |
| 禹庙 | (42) |
| 兰亭 | (42) |
| 沈园 | (43) |
| 鲁迅故居 | (43) |
| 三味书屋 | (43) |
| 乘乌篷船 | (43) |
| 题赠咸亨酒店 | (44) |
| 雁荡 | (44) |
| 黄山 | (45) |
| 黄山云海 | (45) |
| 登天都峰 | (45) |
| 武夷山歌 | (46) |
| 厦门 | (46) |
| 鼓浪屿 | (46) |
| 龙岩行(组诗) | (47) |
| 再访榕城(组诗) | (48) |
| 九江 | (50) |
| 庐山 | (50) |
| 庐山如琴湖抒怀 | (50) |
| 远观汉阳峰 | (51) |
| 也题西林壁 | (51) |
| 登庐山望大江 | (51) |
| 与井冈山合影 | (51) |
| 山东 | (52) |

| | | |
|--------------|-------|------|
| 泰山 | | (53) |
| 泰山登顶 | | (53) |
| 登泰山孔子登临处 | | (53) |
| 过泰山南天门 | | (53) |
| 泰山极顶 | | (54) |
| 清平乐·泰山望远 | | (54) |
| 济南 | | (54) |
| 曲阜 | | (55) |
| 烟台 | | (55) |
| 崂山 | | (55) |
| 中南 | | (56) |
| 嵩山 | | (57) |
| 浪淘沙令·夜过嵩山 | | (57) |
| 咏少林拳 | | (57) |
| 题少林寺面壁石 | | (57) |
| 云台山 | | (58) |
| 开封 | | (59) |
| 题南阳武侯祠兼论新建景观 | | (59) |
| 三门峡水库戏书 | | (59) |
| 小浪底水利枢纽 | | (60) |
| 武汉 | | (60) |
| 武当山 | | (61) |
| 神农架 | | (61) |
| 神农登顶 | | (61) |
| 叩问野人洞 | | (61) |
| 鄂西春行 | | (62) |
| 恩施采风十绝(组诗) | | (62) |
| 衡山 | | (64) |
| 点绛唇·游衡山 | | (64) |
| 衡山探幽 | | (65) |
| 衡山祝融峰 | | (66) |

| | | |
|-----------|-------|------|
| 武陵源 | | (66) |
| 黄狮寨 | | (66) |
| 金鞭岩 | | (66) |
| 长沙 | | (67) |
| 湘江夜色 | | (67) |
| 洞庭湖 | | (67) |
| 到洞庭 | | (67) |
| 君山湘妃墓前望洞庭 | | (68) |
| 岳阳楼口占 | | (68) |
| 广州 | | (68) |
| 珠江 | | (69) |
| 西江月·珠江夜游 | | (69) |
| 鼎湖山 | | (69) |
| 七星岩 | | (69) |
| 深圳 | | (70) |
| 香港 | | (70) |
| 珠海 | | (70) |
| 海南掠影 | | (70) |
| 海口吟 | | (71) |
| 谒海瑞墓 | | (71) |
| 三亚 | | (71) |
| 清平乐·天涯海角 | | (71) |
| 南宁 | | (72) |
| 桂林 | | (72) |
| 西江月·桂林山水 | | (72) |
| 独秀峰 | | (73) |
| 漓江 | | (73) |
| 观漓江“印象”表演 | | (73) |
| 西部 | | (74) |
| 重庆 | | (75) |
| 峨眉春晓 | | (75) |

| | |
|------------|------|
| 峨眉遇雾 | (75) |
| 巴蜀行(组诗) | (75) |
| 成都 | (77) |
| 宜宾 | (77) |
| 贵阳 | (78) |
| 昆明 | (78) |
| 滇池 | (78) |
| 翠湖观鸟 | (79) |
| 大理 | (79) |
| 香格里拉秋行 | (79) |
| 珠峰 | (79) |
| 自制词·青藏高原 | (80) |
| 飞越华山 | (80) |
| 神游华山 | (80) |
| 长相思·华山吟 | (80) |
| 西安 | (81) |
| 又见长安 | (81) |
| 过骊山 | (81) |
| 二过骊山 | (82) |
| 谒黄帝陵 | (82) |
| 访玉华宫 | (82) |
| 寻法门 | (82) |
| 望乾陵 | (83) |
| 酒泉 | (83) |
| 题麦积山真佛洞 | (83) |
| 观麦积山偷笑沙弥有感 | (84) |
| 宁夏吟草(组诗) | (84) |
| 青海 | (89) |
| 青海湖鸟岛 | (89) |
| 天山怀古 | (89) |
| 遥望天山 | (89) |

| | |
|----------------|-------|
| 走进天山 | (90) |
| 翻越天山 | (90) |
| 心在天山 | (90) |
| 登天山望昆仑 | (90) |
| 火焰山 | (90) |
| 拜会火焰山 | (91) |
| 魔鬼城 | (91) |
| 穿越沙漠公路 | (91) |
| 克拉玛依之歌 | (91) |
| 游喀纳斯湖 | (91) |
| 谒红山林则徐立像 | (92) |
| 与新疆生产建设兵团首长一席谈 | (92) |
| 石河子军垦博物馆观后 | (92) |
| 军垦新城石河子 | (93) |
| 飞离大西北 | (93) |
| 域外 | (94) |
| 访俄行吟(组诗) | (95) |
| 英伦印象(组诗) | (97) |
| 居家 | (99) |
| 移居 | (100) |
| 登峰 | (100) |
| 假日 | (100) |
| 秋夕 | (100) |
| 师山 | (100) |
| 重阳登高 | (101) |
| 登山望远 | (101) |
| 秋山笑我 | (101) |
| 我啸秋山 | (101) |
| 乡野过客 | (101) |
| 在大觉寺就餐 | (102) |
| 故地重游 | (102) |

| | |
|--------|-------|
| 送客 | (102) |
| 春雪 | (102) |
| 夏雨 | (102) |
| 秋风 | (103) |
| 冬日 | (103) |
| 夜耕 | (103) |
| 看雁 | (103) |
| 望月 | (103) |
| 把酒问天 | (104) |
| 居家赏秋 | (104) |
| 送秋 | (104) |
| 盼 | (104) |
| 寄远一 | (104) |
| 寄远二 | (105) |
| 寄远三 | (105) |
| 小院独坐 | (105) |
| 思念 | (105) |
| 家山 | (105) |
| 登顶 | (106) |
| 倚山吟诗 | (106) |
| 暮归 | (106) |
| 自家浅酌 | (106) |
| 芳邻 | (107) |
| 与友唱和 | (107) |
| 怀旧 | (107) |
| 饮酒 | (107) |
| 山中独乐 | (108) |
| 秋山远望之一 | (108) |
| 秋山远望之二 | (108) |
| 游山偶遇 | (108) |
| 游山遇雨之一 | (109) |